

गांधी दर्शन

श्याम शंकर उपाध्याय
पूर्व जनपद एवं सत्र न्यायाधीश/
पूर्व विधिकपरामर्शदाता मा0 श्रीराज्यपाल
उत्तर प्रदेश, राजभवन
लखनऊ ।
मोबाइल : 9453048988
e-mail : ssupadhyay28@gmail.com

गांधी जी के जन्मदिवस 02 अक्टूबर पर तथा अन्य अवसरों पर भी प्रायः गांधीवाद की चर्चा होती रहती है । यह गांधीवाद और गांधीदर्शन क्या है इसी पर अपनी बात आज के अवसर पर रखना चाहूँगा ।

गांधी जी की दृष्टि समग्र दृष्टि थी । गांधीचिन्तन सनातन और शाश्वत भारतीय चिन्तनधारा और दार्शनिकता का तत्कालीन परिस्थितियों में गांधी जी द्वारा किया गया रूपान्तर मात्र था । गांधीदर्शन और चिंतन यदि सम्पूर्ण विश्व में अपनी स्वीकारिता और मान्यता प्राप्त कर सका है तो उसके मूल में सनातन और शाश्वत भारतीय चिन्तन परम्परा और दर्शन रहा है । गांधी जी के चिंतन का चाहे धार्मिक पक्ष रहा हो नैतिक, राजनैतिक अथवा आर्थिक पक्ष रहा हो सब पर भारतीय चिंतन परम्परा का गहरा प्रभाव था । राजनैतिक, आर्थिक और सामरिक दृष्टि से क्षिन्न-भिन्न, निर्बल और परतंत्र हो चुके भारतवर्ष में सर्वथा शस्त्रहीन और सैन्यहीन गांधीजी की आवाज उस युग के सबल और पराक्रमी ब्रिटिश शासकों में भय और कम्पन पैदा करने में सक्षम थी तो उसके पीछे गांधी जी की आवाज में व्यक्तित्व और कर्म में निहित प्रबल नैतिक बल का सम्पूर्ण चिंतन सनातन भारतीय दर्शन की गांधी जी के चिंतन में द्वैत और विभेद नहीं था ।

राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद जैसी अवधारणाओं को भी गांधी जी का समर्थन तभी तक था जब तक राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद की अवधारणायें विश्वमानवता की पोषक थीं । गांधी जी मानवता को खंडित अथवा तिरस्कृत करने वाली राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद की अवधारणा के समर्थक नहीं थे । राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद जैसी अवधारणाओं से बहुत ऊपर उठ जाने के कारण ही गांधीजी और उनकी विचारधारा समग्र विश्व में असाधारण स्वीकारिता और उच्च स्थान प्राप्त कर सकी थी । गांधी जी किसी भी अभीष्ट अथवा साध्य को अनैतिक साधनों से प्राप्त करने के पक्षधर नहीं थे, यही कारण था कि गांधी जी का जीवन सत्य के साथ निरन्तर प्रयोग करते रहने वाली प्रयोगशाला जैसा था । गांधी जी का चिन्तन समस्त प्रकार की हिंसा का विरोधी था । गांधी जी एक व्यक्ति के रूप में विश्व में विद्यमान नहीं रहते हुए भी एक सुशक्त विचार धारा के रूप में न केवल विद्यमान हैं अपितु हिंसा, अशांति और विध्वंस से कराह रहे

विश्व में गांधी का अहिंसा दर्शन एक मात्र विकल्प है जिस पर विश्व को थक हार कर कभी न कभी लौटना ही होगा ।

गांधी जी धर्मनिष्ठ आचरण के प्रबल आग्रही थे । गांधी जी राजनीति सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में धर्मनिष्ठ आचरण के पोषक थे । गांधी जी के ही शब्दों में धर्मविहीन राजनीति वैश्यातुल्य थी परन्तु गांधी जी का धर्म और धर्मिकता की प्रकृति मजहबी अथवा कर्मकाण्डी नहीं थी अपितु गांधी जी की दृष्टि में धार्मिकता और शाश्वत नैतिक मूल्य एक दूसरे के पर्याय थे । **परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई, अष्टादश पुराणेश व्यासस्य बचन द्वयम्, परोपकारः पुण्याय पापे परपीडनम् ।** यह था गांधी जी का धर्म और उनकी धार्मिकता ।

दर्शन और विचारधारा को क्रियात्मक रूप देना गांधी जी का शौक था । वर्ण, जाति, समुदाय और राष्ट्र की विभाजक दीवारों को ध्वस्त करते हुए सम्पूर्ण विश्व मानवता द्वारा गांधीवाद और उनका चिन्तन स्वीकार और मान्य किया गया तो गांधी जी के व्यक्तित्व, कृतित्व और चिंतन का नैतिक बल था ।

गांधी जी का आर्थिक चिंतन ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त के नाम से प्रायः जाना जाता है । गांधी जी भौतिक सम्पदा के अनावश्यक और निष्प्रयोज्य संग्रह के प्रबल विरोधी थे और अपरिग्रह के सनातन भारतीय सिद्धान्त के अनुयायी थे । आज के समय में तमाम वैधानिक एवं तकनीकी प्रयासों के उपरान्त भी यदि भ्रष्टाचार, अनाचार जैसी बुराईयों पर अंकुश लगा पाने में शासन पद्धतियाँ विफल हैं तो उसका मूल कारण भौतिक सम्पदा के संग्रह के प्रति विवेकहीन प्रतिबद्धता और अपरिग्रह के सनातन सिद्धान्त से दूर चले जाना है भ्रष्टाचार और अनाचार को समाप्त किये जाने के लिए गांधी जी द्वारा बताया गया ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त आज के समय में भी एक सशक्त विकल्प के रूप में विद्यमान है ।

गांधी दर्शन मनुष्य की अन्तः चेतना को जागृत करके उसे सृजनात्मक मार्ग पर अग्रसर करता है । गांधी जी मनुष्य के जीवन में अनुशासन के प्रबल पक्षधर थे परन्तु अनुशासन के प्रति उनका यह आग्रह बाह्य अनुशासन के प्रति उनका अनुशासन अथवा बाह्यकारकों पर आधारित नहीं था अपितु व्यक्ति के आन्तरिक अनुशासन से सम्बन्धित था । गांधी जी आन्तरिक अनुशासन के द्वारा व्यक्ति के बाह्य और लौकिक क्रियाकलापों को अनुशासित किये जाने के हिमायती थे । आज के समय में जब चारों तरफ अनुशासनहीनता और अनाचरण व्याप्त है और इसे कानून और न्याय को लागू करने वाली संस्थाएं भी अपने पूरे प्रयत्न के उपरान्त भी रोक नहीं पा रही हैं तो ऐसे में गांधी जी द्वारा प्रयोग की गयी आत्म-अनुशासन की अवधारणा सबल विकल्प के रूप में दिखाई देती है । गांधी जी का स्पष्ट मत था कि कानून अथवा भय जैसे

बाह्यकारकों के द्वारा थोपा गया अनुशासन अल्पजीवी और निष्प्रभावी होता है क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही स्वतंत्रता का आग्रही होता है और बाहर से थोपी गयी वर्जना को वह सदैव तोड़ना चाहता है । यह प्रयोग स्वयं गांधी जी ने ही अपने जीवन में ही एक शरारती बच्चे के साथ उसके माता-पिता की शिकायत पर करके दिखाया था । बच्चा गुड़ बहुत खाता था और प्रायः बीमार हो जाता था उसके माता-पिता गुड़ छिपा-छिपा कर रखते थे और बच्चे को प्रायः फटकार भी लगाते थे परन्तु बच्चा नहीं मानता था और उन्हें परेशान कर रखा था । गांधी जी को यह बात जब मालूम हुई तो उन्होंने बच्चे के माता-पिता से कहकर कुछ दिनों के लिए उसे अपने आश्रम में रख लिया और प्रचुर मात्रा में गुड़ और केवल गुड़ वहां रख दिया । बच्चा शुरू में तो गुड़ ही खूब खाता रहा और ऊपर से स्वयं गांधी जी भी उसको बार-बार गुड़ खाने को कहते रहते परिणाम हुआ कि बच्चा गुड़ से पूरी तरह ऊब गया और गुड़ की तरफ देखना भी छोड़ दिया बच्चे के माता-पिता को यह जानकर घोर आश्चर्य हुआ और अपने द्वारा बच्चे पर थोपी गयी बाहरी वर्जना की भूल का भी अहसास हुआ । गांधी जी का यह प्रयोग वास्तव में ईशावास्योपनिषद के इस दर्शन से सम्बन्धित था जहाँ कहा गया है कि *तेन तक्तत्येन भुंजीथा मागृधा कश्यस्वितधनम्* अर्थात् भौतिक पदार्थों अथवा सम्पदा का उपभोग त्यागपूर्वक करना चाहिए न कि उसमें आसक्त अथवा निमग्न होकर । गांधी जी का उपर्युक्त प्रयोग किसी भी विवेकशील व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक हो सकता है । गांधी जी के चिन्तन का उस युग के विख्यात वैज्ञानिक आइंस्टीन पर तो इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि आइंस्टीन को कहना पड़ा था कि आने वाली पीढ़ियों शायद ही विश्वास करें कि गांधी नाम का हाड़-मांस का एक व्यक्ति कभी इतनी मौलिक और शाश्वत विचारधारा का पैदा हुआ था । गांधी जी आज भले ही एक व्यक्ति के रूप में जीवित नहीं हों परन्तु एक शाश्वत् और सशक्त दार्शनिक अवधारणा और विचारधारा के रूप में वह सदैव जीवित रहेंगे और विश्व के लिए प्रासंगिक बने रहेंगे ।

गाँधीवाद एवं गांधी दर्शन

1. धर्म : मजहबी प्रकृति, साम्प्रदायिक प्रकृति, भारतीय चिन्तन परम्परा में *धर्म—धृतिक क्षमा.....*, यतो अभ्युदयः निःश्रेयस स धर्मः, गांधी जी ईश्वर की प्रार्थना करते थे, कुछ चुनिन्दा भजनों गाते थे, उनका कहना था कि *प्रार्थना से उनका मन निर्मल होता है* और उन्हें सत्य और सद्वृत्ति के पथ पर चलने की शक्ति और प्रेरणा मिलती है ।
2. राजनीति : धर्मविहीन *राजनीति* *वेश्या के समान*, परन्तु गांधी जी का धर्म वह जिसका उद्घोष वेद और मनुस्मृति करती है । राजनीति यदि सद्वृत्तियों, नैतिक और मानवीय सद्वृत्तियों पर आधारित हो, सत्य, करुणा, क्षमा, विवेक, असंग्रह, लोक कल्याण के दर्शन से प्रेरित हो तो इसका विरोध भला कौन कर सकता है ।
3. अर्थ : *ट्रस्टीशिप* का सिद्धान्त, अनुचित संग्रह के विरुद्ध, *त्येन त्यक्तेन भुंजीथा*, समाज प्रारम्भ से ही दो स्कूलों में बंट गया था—*विषादपि अमृतं ग्राह्यं, विष्टादपि च कांचनम्*, दूसरे स्कूल वालों की संख्या बढ़ गयी ।
4. भोग : नहीं त्याग के आग्रही गांधी जी
5. अस्पृश्यता : *विद्या विनय सम्पन्ने*
6. आन्तरिक अनुशासन:तमाम एजेन्सियों के बावजूद कानून और न्याय प्रवर्तित नहीं हो रहा ।
7. लाल बहादुर शास्त्री :
8. सत्य : नासते विद्यते भावः
9. अहिंसा/शान्ति : केवल शक्ति सम्पन्न और सबल के मुंह से शोभा देती है, निर्बल, असहाय, अशक्त के मुंह से नहीं, शास्त्री जी इसे समझते थे इसीलिए उन्होंने जय जवान, जय किसान का नारा दिया और देश को सैन्य और आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर, स्वावलम्बी बनाया । यदि हिंसक भालू के समक्ष कोई आ जाये तो हिंसा की अवधारणा उस समय निरर्थक हो जायेगी, अपने बचाव के लिए भालू से अधिक हिंसक होना पड़ेगा । *आचार्य चाणक्य एवं गांधी* में भी भेद ——*त्यजेद मेकं कुलस्य अर्थं*
आत्मार्थं पृथ्वीम् त्यजेत
10. दीर्घकालिक शान्ति : यदि युद्ध से भी प्राप्त हो तो श्रेयस्कर, शास्त्री जी इसके उदाहरण हैं, *महाभारत का युद्ध, स्वयं राम द्वारा लड़े गये* कुछ युद्ध केवल शान्ति के लिए और लोक कल्याण के लिए, दीर्घकालिक शान्ति मानव समाज को बड़े युद्धों के बाद मिली है, दीर्घकालिक शान्ति का बड़ा मूल्य इतिहास में मानव सभ्यता चुकाती रही है ।

(राम, कृष्ण को भी दीर्घकालीन शान्ति स्थापना के लिए लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी थीं) *प्रार्थना*

11. गांधी जी श्रीराम की भजनें गाते थे —पीर पराई जाने ते —वेदव्यास ने 18 पुराणों की रचना के बाद कहा : अष्टादश पुराणेषु -----,
12. उर्ध्ववाहुरवरोमेषि
13. गांधी दर्शन : कोई नया दर्शन नहीं जिससे भारतीय समाज अथवा विश्व प्रथम बार परिचित हुआ हो अपितु भारतीय संस्कृति के सनातन मूल्यों, चिन्तन परम्परा जो वेदों, उपनिषदों और स्मृतियों आदि से आती है, उसी को गांधी ने अपने जीवन में और व्यवहार में तथा आचरण में धारण करके विश्व को यह दर्शाया कि त्याग, अहिंसा, असंग्रह, सत्य आदि को व्यावहारिक जीवन में, सार्वजनिक जीवन में और यहाँ तक कि राजनीति में भी धारित किया जा सकता है ।

(मनुर्भव, वसुधैव कुटुम्बकम्, पीर पराई जाने...)
